ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
UGC Approved Journal
Under
Arts and Humanities
Indian Scholar
An International Multidisciplinary Research e-Journal

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में महानगरीय युगबोध

हर्षवर्धन राहुल
(शोधार्थी)
पीएच–डी. (हिन्दी)
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
शोध केन्द्र : शासकीय उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दतिया (म.प्र.)

राजेन्द्र यादव हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इन्होंने गद्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। कोई भी उपन्यासकार समाज से विमुख होकर यदि किसी कृति को जन्म देता है, तब उसमें सामाजिक चित्र अपने असली रूप में उभर नहीं पाता। लेखक समाज से संपृक्त रहता है। जिस युग में वह जी रहा है, उसकी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से वह पूर्णतः जुड़ा रहता है।

यह अकारण नहीं है कि उपन्यास को आधुनिक पूँजीवादी समाज का महाकाव्य कहा गया है। आधुनिक उपन्यास में परिवर्तन की सूक्ष्म से सूक्ष्म आहट को पकड़ा गया है। यद्यपि राजेन्द्र यादव नवलेखन की उपज है जिसमें अनुभूति की प्रमाणिकता पर बहुत बल दिया गया है लेकिन उन्होंने संतुलन बनाये रखने के लिए समय की प्रमाणिकता का उल्लेख बार–बार किया है। यह समय की प्रमाणिकता और कुछ न होकर युगबोध और समय संपृक्ति का दूसरा नाम है।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में महानगरों के जीवन का सशक्त चित्रांकन है। जनसंख्या आधिक्य के कारण बड़े–बड़े मकानों में जीवननिर्वाह के लिए विवश होना पड़ता है। किसी को घर बैठने की समस्या उनके सामने विकराल रूप में विद्यमान रहती है। सारा आकाश में भी माता–पिता, भाई–भाभी, पति–पत्नि अनेक सदस्य एक ही मकान में रहते हैं। इच्छा होते हुए भी मित्रों को आमंत्रित नहीं किया जा सकता। समर अपने मित्र दिवाकर की पत्नि को मिलाना चाहता है, किन्तु समर के सामने समस्या यह है कि यदि वे आ गये तो उनका सत्कार कैसे किया जायेगा? वह सोचता है– अगर आ गये तो हम उन्हें कहाँ उठाये–बैठायेंगे? झट प्रभा बोल पड़ी– हाय सच्ची यहाँ ले भी मत आना। क्या कहेगें यहाँ का बस देखकर, उनकी खातिर करने को भी कुछ नहीं है?

इस प्रकार छोटे–छोटे मकानों में रहने वाले लोगों की समस्यायें भीषण रूप धारण कर लेती हैं। महानगरों में परिवारों में आने जाने वाले आगुंतकों का आतिथ्य भी, स्थान की कमी के कारण पूर्णरूपेण संभव नहीं हो पाता।

ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
UGC Approved Journal
Under
Arts and Humanities
Indian Scholar
An International Multidisciplinary Research e-Journal

मंत्रविद में भी कलकत्ता जैसे महानगरों की अनेक परेशानियों का संकेत किया गया है। तारकदत्त के साथ भागकर सुरजीत को मित्रों का आश्रय लेना पड़ता है जो स्वयं छोटे–छोटे मकानों में रहते हैं। इस तरह रहने की असुविधा के कारण वह स्वयं को घरेलू वातावरण के अनुकूल ढाल लेना चाहता है। नौकरी पेशा लोगों के लिए अनियमित समय तक किसी की खातिर करना संभव नहीं होता। कभी–कभी मोहन दा एवं इन्दू भी परेशान हो जाते। दो दोस्तों को भी बुलाओ तो चार पहले से घर में मौजूद हैं, छः आदिमयों का खाना, चाय अकेले बादल से संभलता नहीं है। बीस चक्कर तो बाजार के करने पड़ते हैं। अब के सिगरेट ले आओ, अब के पान चाहिए! ये लोग बाजार से आते हैं तो यह भी नहीं कि लिफाफे–पोस्टकार्ड तक लेते आयें उसके लिए भी बादल दौड़ाया जाता है।

महानगरों में दैवन्दिनी जीवन में नौकरों की समस्या बड़ी विकट है। इन्दू को एक मिनट भी चैन से बैठनें को नहीं मिलता। कॉलेज से छूटने के बाद घर के मेहमानों की खातिर उसमें झुंझलाहट उत्पन्न करती है। सारे दिन कॉलेज में सिर खपा कर आओ, फिर घर में समेटते तीन साढ़े तीन बज जाते हैं। फिर रात को ग्यारह साढ़े ग्यारह बजे से पहले खाली नहीं होता..... इन लोगों की वबज से सच, मन में खाने–पीने को लेकर भी बड़ी कमीनी बातें आने लगी हैं।.....

कुलटा में भी कलकत्ता जैसे महानगर में कॉफी हाउस वहाँ की भीड़–भाड़ हुगली में दूर फैली जहाजों की कतारे क्लब, पार्टियाँ, डाँस, शराब की मस्ती में डूबे मेजर और उनकी पत्नियों के दृश्य हैं जो बड़े नगरों के जीवन के खुलेपन का संकेत देते हैं। बाहरी ठाट–बाट, सभ्य और व्यवस्थित जीवन, पिकनिक, स्त्री–पुरुषों का साथ–साथ घूमना, सुचारू एवं संतुलित रूप से बैठकर छुरी–काँटों का प्रयोग करते हुए भोजन करना जैसे सलीके का सूक्ष्म वर्णन है। मिसेज तेजपाल की पोशाक, उनकी बातचीत का सलीका, बार–बार बाल झटकना, महानगर की युवतियों की नजाकत की ओर इंगित करता है। टेविल के सामने मिसेज तेजपाल पेंट और शर्ट ब्लाउज में खड़ी हुई, झुकी–झुकी होठों पर लिपस्टिक लाग रहीं थीं। इसमें महानगरों के फेशनपरस्त लोगों के बाहरी ठाट–बाट के चित्रांकन के साथ ही भीतर खोखलेपन से त्रस्त और दुखी परिवार के लोग भी बाहर से मुस्कुराहट का मुखौटा लगा देते हैं। मिसेज तेजपाल को देखकर यही अंदाज लगाया जा सकता है।

अनदेखे अनजान पुल की निन्नी दिल्ली में नुमाईश देखने अपने भाई के साथ जाती है। दर्शन के साथ अकेले नुमाईश देखने जाना, बस पर सफर, दोनों के कंधों का टकराना और निन्नी की सकपकाई निगाहें किसी परिचित को देखने लगी कि कहीं कोई देख न ले, उसे लगा जैसे वह बस में नहीं, कार्निवाल के भारी चक्राकार कार झूले में बैठी नीचे की ओर चली जा रही है और छाती में हवा भर गई है और सारा संसार धुंधला–धुंधला दिख रहा है..... .....। रह–रहकर मुड़कर बस में देख लेती, कहीं कोई इस मधुर रहस्य को भाँप पतो नहीं रहा? फिर भाव आता है, देख ही लेगा तो कौन जान–पहचान का होगा, जो बाद में सुनायेगा।

बड़े नगरों में लड़के–लड़कियों के इस प्रकार स्वतंत्र घूमने के दृश्यों को उभारने का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है। दिल्ली की चकाचौंध ने निन्नी में मानों बौखलाहट भर दी वह किसी स्वप्निल दुनिया में खो सी गई थी। जैसे ही प्रवेश द्वार से निन्नी ने प्रवेश किया

ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
UGC Approved Journal
Under
Arts and Humanities
Indian Scholar
An International Multidisciplinary Research e-Journal

उस सब कुछ दिखना बन्द हो गया। एक जादू सा मुल्क था, जो लाउड स्पीकरों की आवाजों और जगमगाती नियोन–लाइटों के खम्बों पर टिका था.....। जाने कितनी डेमो बॉधी और योजनाओं के छोटे रूप थे। दर्शन के सान्निद्ध में वह सब कुछ भूल जाती है। महानगरीय चमक–दमक में खो सी जाती है।

अनदेखे अनजान पुल में दिल्ली की विशालता का वर्णन किया गया है किन्तु निन्नी का वहाँ भी अकेलापन त्रस्त करता रहा। महानगरों के अजनबीपन के बोध का संकेत इसमें दिया गया है। दिल्ली से लौटते हुए निन्नी सोचती है और उसी निराधार अधर में उसे यह रेल में लिए जा रहा है.....। मन में घबराहट है। पता नहीं किसी सफर पर निकल पड़ी है वह।

आज के परिवेश में सामान्य व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि किसी को किसी के लिए समय नहीं है। इस यान्त्रिक युग में मानव साथ पाने के लिए तड़प रहा है। अनेक अतृप्त इच्छाओं से असंतुष्ट मानव अपने आपको निहायत एकांकी करने लगा है।

शह और मात में उदय महानगरीय परिवेश से संत्रस्त है। यद्यपि बम्बई जैसे महानगरों में प्रवेश से पूर्व उसने बम्बई पहुँचकर अपना कैरियर बनाने के स्वप्न संजो रखे थे किन्तु महानगर के लोगों की अजनबीपन की भावना ने उसको हतोत्साहित कर दिया। हम बम्बई के बारे में सुना करते थे। लेकिन यह एक ऐसा क्रूर शहर है। इसका अन्दाज पहले कभी नहीं था। मोटर साइकिल वाला सड़क चलते मुसाफिर को धक्का देकर या कुचलकर बिना पीछे मुड़े ही फुल स्पीड पर साइकिल भगाता ले जाता है। यह सीन बम्बई में जब दिन–दहाड़े देखा तो लगा जैसे–मुझे गिराकर कोई चला गया हो आप गिरिए–मरिये, यहाँ किसी को आपकी ओर देखने की फुर्सत नही है। कोई यहाँ आपके निकट आने की कोशिश नहीं करता। वहाँ साथ रहिए जैसे एक शिष्टाचार है जो खिंचता चला जाता है।

महानगरों में छोटे कस्बों का वातावरण नहीं मिलता कस्बे में रहने वाले लोगों की दृष्टि संकुचित रहती है, इसलिए सुजाता की मौसी सुजाता को दी गई आजादी को देखकर विरोध करती है कि लड़कियों को इतनी छूट नहीं दी जानी चाहिए। सुजाता की माँ भी उसके देर सबेरे घर लौटने पर नाराज होती है। लड़के–लड़कियों का मिलना–जुलना वह पसन्द नहीं करती। रेखा द्वारा दी गई सूचनानुसार अक्का तेरी हड्डी–पसली तोड़ने के लिए डण्डा लिए बैठी है। मैं और कह आई हूँ। अभी तक सिर्फ रेडियो–वीडियों पर कुछ पड़ आती थी, अब सबके सामने। ध्रुवस्वामिनी बनेगी। बड़े नगरों में लड़कियों का नृत्य, नाटक, साहित्य–काव्य आदि में रूचि लेना व कलाकार की प्रतिमा से युक्त होकर उसमें भाग लेना बताया गया है। सुजाता के खुले व्यक्तित्व के लिए वह कॉलेज में काफी बदनाम भी है।

उदय को महानगर में लिखने की सुविधा नहीं होती है। यह कार्य वह अपने शहर में ही कर सकता था। बम्बई में शोर–शराबा, रेलें–बसें, भीड़–भाड़ होने से यह सब लेखन के लिए पर्याप्त वातावरण नहीं है। एक ओर तो यह सागर तट की शांति से प्रभावित है– बम्बई में तो आदमी को सिर्फ दो ही जगह रहना चाहिए.....एक तो यहाँ शिवाजी पार्क में या फिर कहीं। दूर जुहू या वारसोवा के शांत किनारों पर यह खुला ग्राउण्ड, मकानों की कतारें, सीमेण्ट के फुटपाथ और चिकनी–चिकनी सड़के, सामने नारियल के पेड़ और दूर सागर की लहराती इठलाती खुनकीली हवा–रियली इट्स रोमेन्टिक.....ऐसी शांति.....। महानगर में इस प्रकार

के वातावरण प्राप्त करने के लिए लोग उत्सुक रहते हैं, क्योंकि शोर शराबे से भागकर लोग कुछ समय शांति प्राप्त करना चाहते हैं, महानगर के परिदृश्य का संकेत राजेन्द्र यादव के कुछ उपन्यासों में है।

एक इंच मुस्कान में भी लेखक ने बम्बई और कन्याकुमारी के समुद्र के परिदृश्यों का विस्तृत वर्णन किया है। दायीं ओर मटमैला सा, अरब का समुद्र है, बाई ओर शस्य श्यामला हरियालियों से रंगा बंगाल का सागर और इन दोनों को स्वीकारता, समोसा सा विशाल हिन्द महासागर, हल्का नीला और आसमानी। जुहू के किनारे बैठे अमर और रंजना मंत्रमुग्ध से इस समुद्र में होते हुए सूर्यास्त को देख रहे थे। जहाँ बम्बई के समुद्र के लहरें नेवैद्य की तरह रंजना को शांत व सौम्य लगती हैं। वही अमला का पुरी के तट पर फैला विशाल सौंदर्य को सार्थक करता हुआ दिखाई देता है। अमर को पुरी के समुद्र की लहरें देखकर मानो आतंक होता है। किन्तु अमला को वे आकर्षक लगती है। आतंक सही शब्द नहीं है। सशक्त सौंदर्य की गतिशील रौद्र सौन्दर्य को भी एक सम्मोहिनी होती है।.....तब बस, यही मन होता है कि किसी ऊँची चट्टान पर जाकर अपने को इन लहरों की गोद में डाल दे, और मन की सारी एठन को इस दुर्द्धर्श आलोडन में एकाकार हो जाने दे.....। सागर के सौन्दर्य की शक्ति और सम्मोहक तो यहाँ हैं।

अमलापुरी के उन्मुक्त वातावरण से प्रभावित है, उसे बम्बई की भीड़–भाड़ एक छूटे हुए से जीवन का संकेत देती है। वह भी कोई सागर हुआ। जैसा तुम्हारे जूहू में है..... मरियल, निर्जीव.....। डरता करता धरती को छुएगा और रेतीले किनारे में रखा जायेगा.....।

इस प्रकार के वर्णन एक ओर तो अमर के मन की उदासी और द्वन्द्व को चित्रित करते हैं। बम्बई के समुद्र की लहरों को गंभीर कहा गया है जबकि पुरी की लहरों में एक उद्यम आवेग है। ऐसा वातावरण केवल विशाल नगरों में देखा जा सकता है जो अपने–अपने जीवन को रूपायित करता है। इस प्रकार महानगरीय जीवन का स्पष्ट प्रभाव लेखक पर दिखाई देता है, जिसके अनेक प्रभावशाली चित्र उनके उपन्यासों में बिखेर हुए हैं।

निष्कर्ष– उपन्यास, आधुनिक गद्य की सर्वाधिक सशक्त और लोकप्रिय विधा है। राजेन्द्र यादव का उपन्यास, के सूत्राधारों में विशिष्ट स्थान है। इन्होंने सृजन को स्वधर्म के रूप में अपनाया। राजेन्द्र यादव के उपन्यासों पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव है। अनेक स्थलों पर साम्यवादी विचारधारा और वर्ग, संघर्ष की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। इनके उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक समस्यायें स्पष्ट दिखाई देती हैं। इनके साथ–साथ आधुनिकता यथार्थवाद एवं महानगरीय युगबोध भी प्रभावशाली है। इन्होंने उपन्यास साहित्य के माध्यम से अनेक सामाजिक समस्याओं को उभारने का सफल प्रयास किया है। ये समाज को प्रगतिशील दिशा की ओर ले जाने के पक्ष में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. सारा आकाश : राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 109
2. मंत्री विद्ध : राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 79–80
3. कुलटा : राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 72
4. अनदेखे अनजान पुल : राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 154
5. शह और मात : राजेन्द यादव, पृष्ठ 30
6. एक इंच मुस्कान : राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 05